ग़ज़ल

सृष्टि सिंह

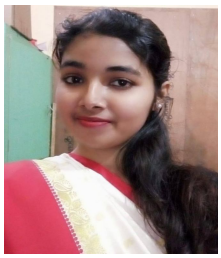

पीएचडी शोधार्थी, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश । विभिन्न साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित

एक

गुलों से वादियाँ महकें, फ़लक पे बिखरे तारे हैं
जमीं से आसमाँ तक खुशनुमा लगते नज़ारे हैं

महावर से सजा तलवे उतरती नाजनीं शब जो
दिये जुगनू के जलते औ चमक उठते सितारे हैं

नई जो कोंपलें लगने लगीं हैं अब दरख्तों पे
हमारे बाग में फिर लौट कर आईं बहारे हैं

दरीचे दिल की हैं नज़रें औ मुखड़ा आईना कोई
गुलों-सी मुस्कुराहट, पंखुड़ी-से लब वे प्यारे हैं

न मिट पाएगी खुद्दारी भले जाँ ही चली जाए
इसी इक शर्त पर रिश्ते सभी निभते हमारे हैं

पहाड़ों से उतर कितने ही दरिया जा मिले फिर भी
समंदर फित्रतन अब भी वही खारे के खारे हैं।

दो

नारी से जीवन सुरभित है, नारी घर का मान है
नारी से ही सृष्टि निरंतर, अनवरत गतिमान है

नारी है विश्वासरूपिणी, नारी प्रतिभाशाली है
दुर्जेय दुर्धर्ष समय में , महाशक्ति महाकाली है
माँ बन सृजन किया नर का, माँ बन हमको पाली है
हर दुविधा को दूर कराती , हर विपत्ति को टाली है
नारी त्याग की मूरत है, नारी पर अभिमान है
नारी से ही सृष्टि निरंतर अनवरत गतिमान है

नारी है इक शौर्य की मूर्ति, नारी लक्ष्मीबाई है
अंग्रेजों की फौज़ डरी, कोई दुर्गा काली माई है
दो हाथों में दो तलवारें, मुख में डोर समाई है
हाय हाय चहुँ ओर मचा, ये नर संहार को आई है
गौरव गाथा में नारी इक, हिंददेश की शान है
नारी से ही सृष्टि निरंतर, अनवरत गतिमान है

बेरंग तुम्हारे जीवन में जो रंग भरे वह रंगिनी है
विपदा में हर कदम साथ दे, नारी ऐसी संगिनी है
आँगन भर दे खुशियों से , जब रूप धरी वह नंदिनी है
मत मारो इक भार समझकर, वह प्रतिपल अभिनंदनी है
जिसको लहु से सींचा इसने , उससे ही परेशान हैं
नारी से ही सृष्टि निरंतर, अनवरत गतिमान है

सती सावित्री सीता है, जग उपवन की माली है
कल कल ध्वनि नदी की है, गीत ग़ज़ल कौव्वाली है
घर की लक्ष्मी,जग की रंगत, होली और दीवाली है
संकट ने जब भी दस्तक दी, नारी बनी भूचाली है
चाँदनी वाली यामिनी है, नारी नवल विहान है
नारी से ही सृष्टि निरंतर , अनवरत गतिमान है

दया विजय करुणा संघर्ष का, नारी इक संदेश है
मदर टेरेसा, इन्द्रा, सुनिता, नारी गौरी लंकेश है
पी वी सिंधु का लोहा लेता आज समूचा देश है
नारी ही पूजनीय जगत में, नारी ही सर्वेश है
नारी से शोभा है जग की, बिन नारी सुनसान है
नारी से ही 'सृष्टि' निरंतर, अनवरत गतिमान है।

तीन

हम न होते याँ अगर वो जोड़ता नाता नहीं
बाद उसके इस जहाँ में औ कोई भाता नहीं

हौसला मेरा है वो पर आजमा लेता है यूँ
दर्द जो इक बार उभरे फिर कभी जाता नहीं

खा के मेरे नाम की कसमें रिहा वो हो गया
जानते थे सब मेरी झूठी कसम खाता नहीं
क्या पता क्या दिल में उसके चल रहा मेरे खुदा
आजकल अच्छे से कोई बात बतलाता नहीं

रब बदल सकता नहीं उसके लिखे भी भाग्य को
जो मुकद्दर मेट कर खुद आप लिखवाता नहीं

जिंदगी के मोड़ पर हर साथ देता है खुदा
उसके जैसा इस जहाँ में कोई भी दाता नहीं

यह ज़मीं दिल की है गिरवी इक महाजन के यहाँ
कोई भरपाई भी उसकी क्यों तो कर पाता नहीं

तेरी यादें, तेरी बातें, ज़ख्म तेरे, ग़म तेरे
दिल के कूचे में सिवा तेरे कोई आता नहीं।

चार

नज़र से नज़र जब सँवारी गई
हरिक साँस तबसे उधारी गई

हक़ीक़त से जब सामना हो गया
पलक से उतरकर खुमारी गई

खुदा ने बनाई जो मूरत हसीं
तेरे रूप में वो उतारी गई

सियासी बहस में फ़ना हो चली
थी बचपन की यारी हमारी गई

ये माहौल कैसा बना देश का
मुहब्बत पे नफ़रत ही भारी गई

कभी रंग लाएँगे अहदे वफ़ा
इसी फ़िक्र में उम्र सारी गई।

पाँच

आज सुबह अखबार खरीदा
पूरा इक संसार खरीदा
देशो- दुनिया की खबरों का
आर खरीदा पार खरीदा

हिंद वतन पर पाक देश का
इक छोटा सा वार खरीदा
चीन देश को देखा मैंने
औरों से हथियार खरीदा

और सियासत बच ना पाई
नेता का घर बार खरीदा
इस सत्ता के अब क्या कहने
चुन-चुनकर लाचार खरीदा

दर्द खरीदी ज़ख्म खरीदा
विफल किसी का प्यार खरीदा
माँ की ममता जाते देखी
और पिता बदकार खरीदा

बाबाओं के झाँसे में आ
अंधभक्त लाचार खरीदा
मूल्य हनन होते समाज के
मानवता की हार खरीदा

महज़ नारियों से सुसज्जित
विज्ञापन बेकार खरीदा
संपादकी बड़ा मन भाया
अभिव्यक्ति अधिकार खरीदा

खेलकूद दुनिया की मैंने
जीत खरीदी हार खरीदा
घटती बढ़ती चलती रहती
सेंसेक्स बाजार खरीदा

कुछ विशेष पृष्ठों को देखा
तब सोचा इतवार खरीदा
ब्यूटी आए या ना आए
टिप्स जरूरी यार खरीदा

सत्य बोध साहित्य जगत में
गीतों की झंकार खरीदा
ज्ञान कराती लघुकथाएँ
और अहम सुविचार खरीदा
गिरती पड़ती मानवता का
तब मैंने उपचार खरीदा
जब कुरान की आयत देखी
जब गीता का सार खरीदा।